जन्माष्टमी - 4 सितम्बर 2026

गोपाल संतान सप्तमी - 18 सितम्बर 2026

संतान गोपाल साधना

श्रेष्ठ-योग्य-मेधावी संतान

गृहस्थ जीवन की दृष्टि से संतान वह दिव्य प्रसाद है, जो दाम्पत्य को पूर्णता प्रदान करता है। संतान के साथ प्रेम उत्तरदायित्व बनता है, त्याग तपस्या बनता है और माता-पिता अपने ही संस्कारों को अगली पीढ़ी में जीवित होते हुए देखते हैं।

सनातन धर्म में दाम्पत्य का कर्तव्य है कि संतान सुसंस्कृत बनायें जो धर्म, संस्कृति और मानवता की ज्योति को आगे बढ़ाए।

'संतान' शब्द का ही शुद्ध रूप है 'संतति' अर्थात् जो सतत् हो। यही कारण है, संतानोत्पत्ति को हिन्दू धर्म में एक पुनीत कर्म माना गया और पुंसवन जैसे संस्कार का विधान रख कर यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया, कि उत्पन्न होने वाली संतान सुयोग्य व स्वस्थ हो।

संतानोत्पत्ति भले ही अपने स्वरूप में एक भौतिक क्रिया हो, किन्तु यह उससे कहीं अधिक मानसिक व भावनात्मक दशा है।

जिस कुल में या वंश में संतान का अभाव है वहां गृहस्थ सुख संभव नहीं है, इसलिए गृहस्थ व्यक्ति के लिए संतान प्राप्ति की प्रबल इच्छा बनती है, क्योंकि वंश वृद्धि के साथ कुल की परम्परा को और समाज की मर्यादा का पालन करने के लिए तथा पितृ मुक्ति के लिए वंश में संतान होना आवश्यक है। संतान के अभाव में नारी पूर्ण नहीं मानी जाती क्योंकि संतान को वात्सल्य का प्रतिरूप माना जाता है, संतान के अभाव में नारी की वत्सलता उद्भूत नहीं हो पाती और विशेष करके भारतीय समाज में संतान के बिना निरन्तर परिवार में अभाव खटकता ही रहता है और परिवार में मनोमालिन्य बना रहता है, संतान के बिना पति और पत्नी का अटूट प्यार का बंधन शिथिल सा होने लगता है।

संतान पुत्र हो या पुत्री कोई अन्तर नहीं होता। अपने पुत्र-पुत्री को समान समझें। उनकी देखभाल, रक्षा, पोषण और पालन माता-पिता के लिये प्रथम कर्तव्य है। संतान की रक्षा हेतु और उसके गुणों में अभिवृद्धि हेतु श्रेष्ठ संस्कार आवश्यक है और संस्कार घर में माता-पिता द्वारा प्रदान किये जाते है।

संस्कारो नाम स भवति यस्मिञ्जाते पदार्थो भवति योग्यः कस्यचिदर्थस्य

संस्कार वह है, जिसके होने से कोई पदार्थ या व्यक्ति योग्य हो जाता है।

ग्रहों का प्रभाव संतान सुख को प्रभावित करता है। संतानहीन दम्पतियों का शुक्र ग्रह अथवा मंगल दूषित रहता है। शुक्र ग्रह स्त्री की 'रज शक्ति' का एवं पुरुष की 'वीर्य शक्ति' का द्योतक है एवं जब शुक्र ग्रह किसी भी प्रकार से मंगल ग्रह के सम्पर्क में आ जाता है तो एक प्रकार से तप्त होकर नष्ट सा हो जाता है एवं संतानोत्पति में बाधा आ जाती है।

धर्मशास्त्रों में संतान-बाधा का एक कारण पितृदोष भी माना गया है...
इसलिए श्राद्ध, तर्पण और पितरों के प्रति कृतज्ञता का विधान किया गया है...

इसी प्रकार कई अन्य ग्रह बाधाओं का प्रभाव संतान के स्वास्थ्य, स्वभाव, आचार-व्यवहार पर पड़ता है।

संतान होना जीवन का सौभाग्य है इसके साथ यह भी आवश्यक है कि हमारी संतान तेजस्वी हो, गुणवान हो, पूर्ण आयु प्राप्त करें। उस पर किसी भी प्रकार का तंत्र दोष अथवा नजर का प्रभाव न हो।

संतान अपने कुल के सम्मान में अभिवृद्धि करें। इस हेतु संतान गोपाल साधना वर्ष में दो बार करना आवश्यक है।

संतान गोपाल साधना को कृष्ण जन्माष्टमी 4 सितम्बर 2026 को अथवा संतान सप्तमी 18 सितम्बर 2026 अथवा **किसी भी बुधवार** को सम्पन्न की जा सकती है।

यह प्रातः कालीन साधना है जिसे प्रातः 8:00 बजे से पूर्व सम्पन्न कर लेना चाहिए। साधना दिवस पर साधक स्नान करके शुद्ध वस्त्र धारण करके, उत्तर दिशा की और मुख करके पीले अथवा सफेद आसन पर बैठ जाए।

साधना विधान

सर्वप्रथम पति-पत्नी स्नान कर पीला आसन बिछाकर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाये और अपने सामने एक लकड़ी के बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा दें। बाजोट पर गुरु चित्र एवं भगवान श्रीकृष्ण का बाल स्वरूप चित्र स्थापित करें। घी का दीपक और अगरबत्ती प्रज्ज्वलित करें। बाजोट के मध्य में एक तांबे की प्लेट में **'पुत्रेष्टि यंत्र'** जो संतान गोपाल मंत्रों से अभिमंत्रित हो स्थापित करें।

सर्व प्रथम भगवान गणेश का ध्यान कर, पंचोपचार गुरु पूजन कर एक माला गुरु मंत्र का जप करें।

गुरु मंत्र

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

गुरु पूजन के पश्चात् मूल साधना विधान प्रारम्भ करें। इस हेतु दोनों हाथ जोड़कर श्रीकृष्ण भगवान के बाल रूप का ध्यान करते हुए हुए निम्न ध्यान मंत्र का पाठ करें।

श्रीशं कमल पत्राक्षं देवकीनन्दनं हरिम्।
सुत सम्प्राप्तये कृष्णं नमामि मधुसूदनम्।।
नमाम्यहं वासुदेवं सुतसम्प्राप्तये हरिम्।
यशोदाकगतं बालं गोपालं नन्दनन्दनम्।।
अस्माकं पुत्रलाभाय गोविन्दं मुनिवन्दितम्।
नमाम्यहं वासुदेवं देवकीनन्दनं सदा।।
गोपालं डिम्भकं वन्दे कमलापतिमच्युतम।
पुत्र सम्प्राप्तये कृष्णं नमामि यदुपंगवम्।।

इसके पश्चात् निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए यंत्र पर पुष्प अर्पित करें।

आवाह्यामि देवेशं देवकी गर्भ संभवम्।
बालरुपधरं कृष्णं सच्चिदानन्द विग्रहम

यंत्र पर अक्षत अर्पित करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

श्रीकृष्णाय नमः आवाहनं समर्पयामि

यंत्र को पंचामृत से स्थान कराते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम
श्री कृष्णाय नमः पंचामृत स्नानं समर्पयामि

तत्पश्चात यंत्र को शुद्ध जल से स्नान कराकर दूसरी प्लेट में रखे और केसर, अक्षत, पुष्प (पीले), धूप दीप से पूजन करें तत्पश्चात निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए अष्टगंध से पांच बिन्दी यंत्र पर लगाये।

ॐ गोविन्दाय नमः *ॐ गोपालाय नमः*
ॐ जन्मरहिताय नमः *ॐ नवनीत प्रियाय नमः*
ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः

इसके बाद यंत्र से थोड़ी सी अष्टगंध लेकर पत्नी की नाभि पर लगा लें और पुत्रेष्टि माला को गले में धारण कर निम्न मंत्र का आधा घण्टा जप करें।

संस्कृत में संतान के लिये सुत शब्द है, जिसमें पुत्र और पुत्री में विभेद नहीं है।

मंत्र

ॐ क्लीं देवकी सुत गोविदं वासुदेव जगत्पते देहि में तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः

मंत्र जप के पश्चात् माला को अपनी संतान को धारण करा दे। यदि संतान प्राप्ति की इच्छा से साधना सम्पन्न की है तो यह प्रयोग तीन एकादशी को सम्पन्न करे। तब तक माला माता अपने गले में ही धारण रखें। तत्पश्चात माला को जल में विसर्जित कर दें।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/-